तथा विकासशील दोनों प्रकार के देशों में अधिकांश नगरों का विकास अनियोजित ढंग से हुआ है। यदि नगरों को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से उन्हें योजनानुसार बसाने का प्रयास किया जाये तो और भी अधिक भूमि की आवश्यकता पड़ेगी जिससे 15 से 20 प्रतिशत कृषि भूमि में कमी आ सकती है। उपजाऊ भूमि पर गृह-निर्माण के कारण कृषि भूमि में कमी आना किसी भी देश के लिए चिन्ता का विषय है।

नगर में नये अद्योगों को स्थापित करने तथा बड़े-बड़े स्टोर गृहों के निर्माण के लिए अधिक और सस्ती भूमि की आवश्यकता होती है जो नगर के भीतरी भागों में प्राय: उपलब्ध नहीं हो पाती है। इन उद्देश्यों के लिए विस्तृत भूमि नगर के उपान्त क्षेत्र में ही उपलब्ध होती है। नगर की सीमा पर किसी प्राकृतिक अवरोध (जलाशय, पहाड़ी, गर्त आदि) की स्थिति में उद्योगों को नगर से कुछ दूर भी स्थापित करना पड़ता है। नगर में भूमि के अभाव के कारण नगर से बाहर प्राय: किसी एक खण्ड में औद्योगिक बस्तियों का विकास हो जाता है जैसा कि शिकागो, लन्दन, दिल्ली, कानपुर, अहमदाबागद, बंगलौर आदि नगरों में देखा जा सकता है।

(ब) भूमि-मूल्य में वृद्धि :- नगरीय आवश्यकता में वृद्धि से उत्पन्न स्थानाभाव के कारण भूमि का मूल्य अत्याधिक ऊँचा या ज्यादा हो जाता है और रहने, काम करने, दुकान और अन्य विविध सामाजिक-आर्थिक कार्यो के लिए भूमि प्राप्त करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। मूल्य का निर्धारण सामान्यत: माँग और पूर्ति के आधार पर होता है। नगर में कृषि भूमि तो सिमित होती है, किन्तु विविध नगरीय कार्यो के लिए भूमि की माँग अत्याधिक बढ़ जाती है जिसके परिणामस्वरूप भूमि का मूल्य अत्याधिक बढ़ जाता है। न्यूयार्क तथा लन्दन के केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र (C.B.D.) में भूमि का मूल्य क्रमश: 80 हजार डालर और 10 हजार डालर प्रति वर्ग मीटर से भी अधिक है। लन्दन की मलिन बस्तियों (Slums) में भी भूमि 1000 डालर प्रति वर्ग मीटर से कम नहीं है। भूमि की मंहगाई की हालत विश्व के लगभग सभी बड़े नगरों में देखने को मिल रहा है। किसी-किसी नगर के औद्योगिक क्षेत्रों में भी स्थानाभाव के कारण भूमि-मूल्य आवासीय क्षेत्रों से अधिक हो जाता है।

नगरीय भूमि के मूल्य वृद्धि का सीधा सम्बन्ध नगर में जनसंख्या की तीव्र और आवास के लिए गृह-निर्माण हेतु अधिक भूमि की माँग से है। केन्द्रीय भाग के बाहर स्थित पुराने आवासीय क्षेत्र जहाँ मकान पुराने आवासीय क्षेत्र जहाँ मकान पुराने तथा जर्जर और उच्च वर्गीय आवास के योग्य नहीं होते, वहाँ भूमि का मूल्य अपेक्षाकृत कम रहता है। इसी प्रकार नगर के बाहरी भाग में तथा निचले जल भराव और गंदगी वाले क्षेत्रों में भी भूमि का मूल्य कम रहता है। किन्तु अत्याधिक जनभार के कारण मध्यम वर्गीय तथा निर्धन मजदूरों के लिए गृह-हेतु भूमि क्रय कर पाना स्वप्न मात्र ही रह जाता है। नगर-नियोजन में सामान्यत: सम्भावित भूमि के अभाव तथा उससे उत्पन्न मूल्य वृद्धि की समस्या पर ध्यान दिया जाता है।

(ii) आवासीय समस्या : अत्याधिक जनसंख्या के संकेन्द्रण के कारण विश्व के वृहत नगरों में आवास की समस्यस अत्यंत विकराल और मुश्किल है जिसका समाधान आसान नहीं है। नगरों में प्रति वर्ष बड़ी संख्या में लोग ग्रामीण क्षेत्रों अथवा अन्य बाहरी क्षेत्रों से आकर बसते जाते हैं जिससे नगरों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती जाती है, किन्तु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नगर में गृहों की संख्या नहीं बढ़ पाती है जिसका परिणाम होता है गृहों का अभाव तथा आवासीय समस्या। ग्रामीण क्षेत्रों से स्थानांतरित होकर नगर में आयी अधिसंख्य जनसंख्या को बेरोजगारी तथा अन्पाय के कारण सस्ते किराये वाले गृहों की तलाश रहती है जबकि नगर में अधिक माँग तथा सीमित गृहों के कारण मकानों के किराये इतने ऊँचे होते हैं कि निम्न आय वर्ग के लोगों की पहुँच के बाहर होते हैं। यही कारण है कि बड़े तथा औद्योगिक नगरों में बड़ी संख्या में लोग गंदी बस्तियों तथा झुग्गी-झोपड़िया अथवा फुटपाथों पर सोने के लिए विवश होते हैं।

विश्व के प्राय: सभी बड़े नगरों में मलिन बस्तियाँ (Slums) किसी न किसी रूप में पायी जाती है। विशेष रूप में औद्योगिक नगरों की तो ये लक्षण ही बन गयी है। कारखानों में काम करने वाले अल्पाय वाले श्रमिक कारखानों के निकट ही खाली पड़ी भूमि पर बनायी गयी झुग्गी-झोपड़ियों के निकट ही खाली पड़ी भूमि पर बनायी गयी झुग्गी-झोपड़ियों में रहते हैं, क्योंकि कार्यस्थल के निकट होने के साथ ही उन्हें किराया भी कम देना पड़ता है। नगरों के केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र (C.B.D.) या चौक क्षेत्र में मुख्य सड़क पर सजी-धजी बहुमंजिली इमारतें होती हैं, जहाँ मकान इतने जीर्ण-शीर्ण तथा पुराने होते हैं कि वे गिराये जाने लायक होते हैं। अत: नगर के इस भाग में मकान सस्ते किराये पर मिल जाते हैं और अल्पाय वाले श्रमिक यहाँ आश्रय प्राप्त करते हैं। यह क्षेत्र नगर के मध्य में होता है, किन्तु यहाँ का वातावरण निवास के योग्य नहीं होता है और गंदगी तथा कूड़ा-करकट से भरा रहता है।

नगर के अन्य क्षेत्रों में भी जहाँ कहीं सरकारी या सार्वजनिक भूमि खाली रहती है उस पर प्राय: असामाजिक तत्व बलात् कब्जा कर लेते हैं और वहाँ झुग्गी-झोपड़ियों का निर्माण करके सस्ते किराये पर कमरे उपलब्ध कराते हैं। इन गन्दी बस्तियों में स्नानगार तथा शौचालयों का प्राय: अभाव रहता है। शौचालयों के रूप में नालियों तथा खुली भूमि का उपयोग किया जाता है जिससे वातावरण प्रदुषित होता है। इस कारण यहाँ तरह-तरह की बीमारियों फैलती है। ये गंदी बस्तियाँ प्राय: असमाजिक तत्वों की शरणस्थली और अड्डा होती हैं जहाँ अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ-जुआ खेलना, शराब पीना, हत्या, बलात्कार, वेश्यावृति आदि पनपती हैं जो स्वस्थ्य नगरीय जीवन के लिए अत्यंत घातक होती हैं और नगरवासियों का जीवन नरकीय बना देती है।

(iii) परिवहन की समस्या : नगर के लिए सड़कें शरीर में रक्त प्रवाही धमनियों के समान होती हैं जिनसे होकर नगर में व्यक्तियों तथा वस्तुओं के रूप में जीवनीय तत्वों का संचरण होता है। अत: सड़कों की स्थिति अच्छी तथा गमनागमन योग्य होने पर ही नगरीय जीवनव विकासशील और सुखमय हो सकता है। नगर के भीतर नवीन सड़कों का निर्माण तथा पुरानी सड़कों की मरम्मत का कार्य नगर प्रशासन के लिए एक बड़ा आर्थिक भार होता है जिसके कारण नगर के अनेक भागों में सड़कें इतनी बुरी स्थिति में होती हैं कि उनपर मोटर वाहन चलना कठिन होता है। यद्यपि विकसित देशों में नगर की सड़के सामान्यत: मोटर परिवहन के योग्य होती हैं, किन्तु वहाँ भी बहुत सी सड़कों की स्थिति अच्छी नहीं होती। खराब सड़कों की समस्या अधिकांशत: विकासशील देशों में हैं जहाँ जनसंख्या के अनियांत्रित संकेन्द्रण के कारण नगर का प्रसार बाहर की ओर होता जाता है। किन्तु धनाभाव के कारण पक्की सड़कों का निर्माण नहीं हो पाता है। भारत ही नहीं सभी एशियायी, अफ्रीकी तथा लैटिन अमेरिकी विकासशील देशों में अधिकांश सड़कों की स्थिति अच्छी नहीं है जिनकी एक बार मरम्मत होने के पश्चात कई वर्षो तक पुन: मरम्मत का नम्बर नहीं आता। नगरों में सड़कों की खराब स्थिति का प्रमुख कारण स्थानीय निकायों के पास धनाभाव का होना, तकनीकी साधनों की अपर्याप्तता, जन-उपनगरीय की कमी आदि है।

नगर का अपने प्रभाव क्षेत्र तथा उपनगरीय क्षेत्रों से घनिष्ठ कार्यात्मक सम्बन्ध होता है। उपनगरीय (उपांत) क्षेत्र से प्रतिदिन भारी संख्या में अभिगंता नगर में आते हैं जिनमें नगरीय प्रतिष्ठानों, अद्योगों, कार्यलयों आदि में काम करने वाले लोग, व्यवसायी, विधार्थी तथा साग-सब्जी, दूध आदि आवश्यक वस्तुओं को पहुँचाने वाले लोग सम्मिलित होते हैं। दिन भर नगर में अपना-अपना काम करके दिन में ही या शाम को वे पुन: अपने-अपने निवास स्थान को पहुँचना चाहते हैं। इस प्रकार नगर और उपनगरीय क्षेत्र के मध्य दैनिक आवागमन के लिए तरह-तरह की कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती है।

विश्व में नियोजित ढंग से बसाये गये नगरों की संख्या बहुत कम है जहाँ सड़कों को पर्याप्त चौड़ा और समयानुकूल बनाया गया है। सामान्यत: अधिकांश नगरों के आंतरिक भागों में सड़कों के संकरा होने तथा वाहनों की अधिकता से इतनी अधिक भीड़ एकत्र हो जाती है कि कभी-कभी घण्टों यातायात अवरूद्ध हो जाता है। भीड़ की समस्या भारत के मुम्बई, कोलकता, चेन्नई, दिल्ली, अहमदाबाद, लखनऊ, वाराणसी, पटना आदि नगरों में ही नहीं है, बल्कि विश्व के अन्य विकसित तथा विकासशील देशों में भी पायी जाती है। सर्वाधिक भीड़ नगर के व्यस्ततम क्षेत्र (चौक या सी०बी०डी०) में देखी जा सकती है जहाँ पहुँचने के लिए वाहन काफी दूर छोड़कर पैदल ही चलना पड़ता है। नगर में वाहनों की भीड़ कम करने के उद्देश्य से नगर के बाहर-बाहर उपमार्ग (Bipass) बनाये जाते हैं। अनेक महानगरों में सुरंग मार्ग द्वारा रेले और बसें चलायी जाती है।

(iv) जलापूर्ति की समस्या : मानव जीवन के लिए अनिवार्य तत्वों में वायु के पश्चात् जल का ही स्थान है और जल के अभाव में जीवन सम्भव नहीं है। नगर के संकेन्द्रित विशाल जनसंख्या के लिए शुद्ध पेय जल की आपूर्त्ति कर पाना नगर प्रशासन के लिए एक बड़े उत्तरदायित्व और कठिनाई का काम होता है। शुद्ध पेय जल के अतिरिक्त नगर में स्थापित विविध उद्योगों तथा घरेलू उपयोगों के लिए काफी जल की आवश्यकता होती है। स्थानीय उपलब्धता तथा तकनीकी विकास के अनुसार नगरों में स्थानीय नदियों, नहरों, झीलों, झरनों आदि स्त्रोतों अथवा भूमिगत जल को नलकूपों द्वारा ऊपर निकालकर उपलब्ध कराया जाता है। जो नगर किसी प्राकृतिक जलाशय (नदी, झील आदि) के किनारे या निकट स्थित हैं, वहाँ उन स्त्रोतों के जल का ही अधि काधिक उपयोग किया जाता है, किन्तु उनसे भी जल प्राप्त करने की एक सीमा होती है। अनेक नदियों तथा झीलों का जल स्तर शुष्क ऋतु में अधिक नीचे चला जाता है जिसके कारण शुष्क ऋतु में पर्याप्त जलापूर्ति नहीं हो पाती है। शुष्क ऋतु में भौम जलस्तर भी नीचे चला जाता है। जिसके कारण शुष्क ऋतु में नलकूप भी भूतल तक जल को खींचने में बेकार सिद्ध होते हैं। इस प्रकार ग्रीष्म तथा शुष्क काल में नगरों में जलाभाव की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। विद्युत आपूर्ति में बाधा या विद्युत कटौती के कारण भी जलापूर्ति बाधित हो जाती है। कभी-कभी तो पीने भर को भी पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है तथा कई दिनों तक नल की टोटियों में पानी नहीं टपकता है। सबसे बुरी स्थिति उन मुहल्लों (क्षेत्रों) की होती है जो अपेक्षाकृत ऊँचाई पर बसे होते हैं। अनेक नगरों में पूरे ग्रीष्मकाल भर पहली और दूसरी मंजिलों पर पानी नहीं पहुँच पाता है।

(v) विद्युत आपूर्ति की समस्या : यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विद्युत आधुनिक नगर का प्राण है जिसके अभाव में नगर मृत प्राय हो जाता है। अत: बिजली के बिना आधुनिक नगरीय जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। रात्रि में सड़कों पर तथा घरों में विद्युत के द्वारा ही प्रकाश मिलता है। भूमिगत जल को नलकूपों द्वारा भूतल पर लाने तथा उसे घरों और कारखानों तक पहुँचाने के लिए मशीनों तथा उपकरणों को भी विद्युत की आवश्यकता होती है। प्राय: सभी छोटे-बड़े नगरों में स्थित कारखानें विद्युत से ही संचालित होते हैं।

गर्म प्रदेशों में पंखा चलाने, कमरों को शीतल करने, जल तथा खाद्य वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए प्रयुक्त रेफ्रीजरेटरों, शीत गृहों तथा ऐसे ही अनेक उपयोगों के लिए भी अधिक मात्रा में विद्युत की आपूर्ति आवश्यक होती है। इतना ही नहीं, मनोरंजन, तथा संचार के प्राय: सभी साधन बिजली से ही संचालित होते हें। आज अधिसंख्य घरेलू उपकरणों को चलाने के लिए भी बिजली आवश्यक होती है। चिकित्सालयों में विद्युत भंग हो जाने पर मरीजों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

नगर में जनसंख्या वृद्धि तथा उद्योगों की बढ़ती संख्या एवं आकार के अनुकूल विद्युत आपूर्ति करना बहुत जटिल कार्य होता है, विशेषरूप से जब विद्युत उत्पादन या उनलब्धता की मात्रा सीमित होती है। विकसित तथा

विकासशील दोनों प्रकार के देशों में असंख्य ऐसे नगर हैं जहाँ विद्युत आपूर्ति वर्षभर अबाध रूप से नहीं हो पाती है। गर्मियों में गर्म प्रदेशों में स्थित नगरों को प्राय: हर वर्ष भारी विद्युत संकट से गुजरना पड़ता है। विद्युत के अभाव के कारण अनेक नगरों में विद्युत कटौती करनी पड़ती है जिससे जनजीवन तथा औद्योगिक उत्पादन आदि बुरी तरह प्रभावित होता है।

(vi) स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्या : नगर में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, मलिन बस्तियों के विकास जल एवं वायु प्रदुषण, शुद्ध पेय जल की आपूर्ति में गड़बड़ी होने, निर्धनता एवं बेरोजगारी आदि के परिणामस्वरूप नगरों में तरह-तरह की बीमारियों के फैलने से जनस्वास्थ्य में गिरावट आती है। इसके लिए उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था की उतनी समस्या नहीं है जितनी विकासशील देशों में है, किन्तु स्वास्थ्य की समस्या थोड़ी बहुत सभी नगरों में पायी जाती है।

कभारत में नगरों में स्पतालों की कमी है और जो अस्पताल है उनमें शय्याओं तथा सुविधाओं की भी कमी है। आधुनिक मशीनें तथा उपकरण तो कुछ गिने-चुने बड़े अस्पतालों में ही उपलब्ध होते हैं। भारतीय नगरों में प्रति हजार व्यक्तियों पर मुश्किल से एक शैय्या की व्यवस्था हो पाती है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति 11 व्यक्तियों पर एक शैय्या उपलब्ध होती है। कमरों तथा शय्याओं के अभाव में कितने मरीजों को बरामदे के फर्श पर अथवा बाहर खुले आसमान में तथा पेड़ों के नीचे रात-दिन बिताने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त आजकल अनेक सरकारी चिकित्सालयों में चिकित्सा की दयनीय स्थिति कुप्रबन्ध, सफाई के अभाव आदि को देखकर सामान्य जन भी प्राइवेट चिकित्सालयों तथा नर्सिंग होम में इलाज कराने को बाध्य होते हैं। यद्यपि वहाँ उन्हें अधिक धन व्यय करना पड़ता है। इस प्रकार भारत जैसे विकासशील देशों के नगरों में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्या नगर प्रशासन तथा नगरवासियों के लिए गंभीर चुनौती बन गयी है।

(vii) शिक्षा एवं मनोरंजन की समस्या : नगरों में शैक्षिक स्तर गाँव की तुलना में अच्छा होता है। अधिक जनसंख्या के कारण नगरों में छात्र-छात्राओं की संख्या भी अधिक होती है जिनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त विद्यालयों, महाविद्यालयों, प्रशिक्षण संस्थानों आदि की आवश्यकता होती है। बड़े नगरों में विश्वविद्यालय भी होते हैं। नगर के शिक्षा संस्थानों में नगर से बाहर के विद्यार्थी भी पढ़ने आते हैं। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि ने हो पाने पर नगरीय क्षेत्र के बच्चों को समुचित शिक्षा तथा प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है। अधिकांश भारतीय नगरों में नर्सरी से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की कक्षाओं में सभी इच्छुक छात्र-छात्राओं को इच्छित जगहों पर प्रवेश नहीं मिल पाता है जिसके कारण विद्यार्थी और उनके अभिभावकों को काफी परेशानी होती है। व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओं में तो प्रवेश के लिए होड़ लगी रहती है और केवल अल्पांश छात्र ही उनसे लाभ उठा पाते हैं। विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि और समुचित शिक्षा से वंचित रहने के साथ ही एक नयी समस्या सामने आ रही है, वह है शिक्षसा का गिरता स्तर। आवश्यक शैक्षिक सुविधाओं तथा प्रशिक्षित एवं योग्य शिक्षकों की कमी के कारण भी शिक्षा के स्तर में पतन की प्रवृति उत्पन्न हुई है। नगरों में प्राइवेट कोचिंग की परम्परा बढ़ती जा रही है जिसके लिए छात्रों को इतना अधिक धन व्यय करना पड़ता है कि शिक्षा सामान्य मध्य एवं निम्न मध्यम परिवार के लिए दुष्कर बोझ बनती जा रही है। इसी प्रकार अनेक पब्लिक स्कूलों में अतनी अधिक फीस जी जाती है कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर अभिभावक तो अपने बच्चें को ऐसे स्कूलों में भेजने को सोच भी नहीं सकते। इस प्रकार भारतीय नगरों में धनी एवं सम्पन्न उच्च वर्ग के जिए पब्लिक स्कूल चलाये जाते हैं तो निर्धन तथा मध्यम वर्ग के लिए सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी विद्यालय होते हैं। इससे शैक्षिक जीवन से ही विद्यार्थी दोहरी शिक्षाप्रणाली के कारण उच्च और निम्न दो वर्गो में बंट जाते हैं जो सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण से उचित नहीं है।

नगरवासियों के मनोरंजन के लिए अपयुक्त सुविधाएँ प्रदान करना भी नगर का दायित्व होता है। इसके लिए नगर में रेडियो तथा दूरदर्शन केन्द्र होते हैं और अधिक संख्या में सिनेमाघर, थियेटर, क्लब, खेल के मैदान, पार्क, पुस्तकालय आदि की भी व्यवस्था आवश्यक होती है। मनोरंजन की सुविधाओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से नगर में बाहर से भी काफी लोग आते हैं। अत: बढ़ती जनसंख्या के साथ ही नगर में मनोरंजन सुविधाओं की वृद्धि भी आवश्यक हो जाती है जिस पर काफी धन खर्च होता है। भारत के अनेक छोटे-बड़े नगरों में विभिन्न मनोरंजन केन्द्रों पर भारी भीड़ तथा टिकट-खिड़कियों पर लम्बी कतारें देखी जाती हैं जो स्पष्ट करती हैं कि वहाँ मनोरंजन सुविधाओं का अभाव है।

(viii) मल-मूत्र विसर्जन एवं जल निकासी की समस्या : नगर में घरेलू उपयोग के लिए तथा कारखानों में बड़ी मात्रा में जल का प्रयोग होता है जो गंदे जल के रूप में विसर्जित होता है। सड़क की नालियों से बहता हुआ गंदा जल गंदे नाले या सीवर पाइपों में पहुँचता है जहाँ से उसे नगर के बाहर निकालने की व्यवस्था की जाती है। नगर से निकलने वाले गन्दे जल में अनेक प्रकार के विषैले पदार्थ मिले होते हैं, जो मनुष्य तथा जीवों के लिए ही नहीं बल्कि पेड़-पौधो के जीवन के लिए भी हानिकारक होते हैं। इस कारण इस जल का उपयोग कृषि या बागवानी के लिए भी उपयुक्त नहीं रह जाता। अत: आधुनिक नगरों में गंदे जल के विसर्जन की बहुत बड़ी समस्या होती है। इस प्रदूषित जल के रिसकर नीचे पहुँचने से भूमिगत जल भी प्रदूषित हो जाता है जिससे कुओं और नलकूपों द्वारा निकाला गया जल भी प्रदूषित रहता है।

भारत में नदियों के किनारे स्थित नगरों के गंदे जल का विर्सजन सामान्यत: नदियों में कर दिया जाता है जिसके कारण नदियों का जल प्रदूषित होता जा रहा है। केवल विकासशील देशों में ही नहीं, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड जैसे विकसित देशों में भी नगरों के गंदे जल के विर्सजन से कितनी ही नदियों तथा झीलों का जल प्रदूषित और विषैला हो गया है।

(ix) अपशिष्ट पदार्थो के विसर्जन की समस्या : सभी नगरों में वस्तुओं के उपयोग के पश्चात घरों से प्रतिदिन कूड़ा-करकट तथा अनेक प्रकार के ठोस अपशिष्ट पदार्थ बाहर निकाले जाते हैं जिनका सड़क पर ढ़ेर लग जाता है। पुराने मकानों के गिराने, नलियों की खुदाई आदि से भी कूड़ा-करकट इक्ट्ठा होते रहते हैं। यदि कूड़े को एकत्र करके नगर से बाहर नहीं किया जाता तो उनके सड़ने तथा बिखरने से भयंकर बीमारियों के फैलने की आशंका बनी रहती है। इसके लिए सड़कों पर जगह-जगह कूड़ेदान की व्यवस्था करनी पड़ती है जहाँ घरों से निकलने वाले कूड़े एकत्र किये जाते हैं और वहाँ से उन्हें गाड़ियों द्वारा हटाकर नगर के बाहर उचित स्थान पर पहुँचाया जाता है। सड़कों तथा नालियों को स्वच्छ रखने के लिए कूड़े की सफाई अनिवार्य होती है। किसी खुली जमीन पर कूड़ों को एकत्र करके उसे जलाकर भी नष्ट किया जाता है। बड़े-बड़े गर्तो में कूड़े को सड़ाकर खाद भी बनायी जा सकती है।

जनता की लापरवाही तथा अज्ञानता और नगरीय प्रशासन की उपेक्षा से अधिकांश भारतीय नगरों की सड़कों पर कूड़े के ढ़ेर दिखाई पड़ते हैं जो कभी-कभी कई सप्ताह तक अपने स्थान पर ही पड़े रह जाते हें। बरसात के मौसम में कूड़े के सड़ने से अत्याधिक दुर्गन्ध निकलने लगती है और अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं। इस प्रकार नगरीय प्रशासन के सामने कूड़े जैसे अपशिष्ट पदार्थो के सफाई की भी समस्या गंभीर बनी रहती है। हाल के वर्षो में प्लास्टिक या पालीथिन के थैलों तथा बोतलों का प्रयोग नगरों में इतना अधिक होने लगा है कि अनेक ढेर से एक नयी और अति गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी है। प्लास्टिक पदार्थो का कूड़ों में ढ़ेर लग जाता है जो न तो सड़ते हैं और न तो जलाने पर ही पूर्णतया नष्ट होते हैं। प्लास्टिक के थैले नालियों, नालों, सीवर पाइपों आदि में फंस जाते हैं जिनसे जल निकास अवरूद्ध हो जाता है।

(x) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या : विश्व के विभिन्न बड़े नगरों में पर्यावरण के प्रदूषित होने की समस्या सामान्य है। इनमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि प्रमुख हैं।

वायु प्रदूषण :- घरों की रसोई गृहों से निकलने वाले धुएँ, चिमनियों के धुएँ, वाहनों और कारखानों आदि से निकलने वाली गैसों से निचले वायुमण्डल में कार्बन-डाई-आक्साइड, मोना आक्साइड, ओजोन आदि की मात्रा बढ़ जाती है जो मनुष्य के अतिरिक्त अन्य जीवों तथा वनस्पतियों के लिए भी हानिकारक होती हैं। वायु के प्रदूषण होने से सांस लेने में कठिनाई होती है और अनेक प्रकार की फेफड़े-सम्बन्धी बीमारियाँ उत्पन्न होती है। ऊँची-ऊँची इमारतों के कारण पवनों के सामान्य प्रवाह में रूकावट आती है। वायु प्रदूषण की सर्वाधिक समस्या औद्योगिक नगरों में विशेष रूप से कारखानों के समीपस्थ क्षेत्रों में पायी जाती हैं। पेड़ों तथा वनस्पतियों के अभाव में वायु प्रदूषण कम नहीं हो पाता है।

कोलकता, अहमदाबाद, दिल्ली, कानपुर आदि अनेक नगरों के पुराने भागों में कारखानों के समीप ही आवासीय क्षेत्र पाये जाते हैं जहाँ रहने वाले लोग प्रदूषित वायु से होनेवाली बीमारियों के अधिक शिकार होते हैं।

जल प्रदूषण:- नगरीकरण में वृद्धि से जल प्रदूषण में भी वृद्धि हुई है। जल प्रदूषण कई रूपों में होता है। कारखानों से निकलने वाला विषैला जल और मल-मूत्र सम्बन्धी गंदा जल जहाँ विसर्जित होता है, वहाँ का जल प्रदूषित हो जाता है। नगर का गंदा जल सामान्यत: किसी समीपी नदी, झील, तालाब आदि में बहाया जाता है। जिससे उन जलाशयों का जल विषैला हो जाता है और मानव उपयोग तथा अन्य जीवों के लिए भी हानिकारक होता है। गंगा नदी के किनारे स्थित कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना आदि नगरों में विसर्जित गंदे एवं विषैले जल से गंगा नदी का पवित्र जल भी अत्याधिक प्रदूषित हो गया है और पीने योग्य नहीं रह गया है।

ध्वनि प्रदूषण:- लाउड स्पीकारों के तेज बजने, मोटर वाहनों की आवाजों, कारखानों की मशीनों के चलने से उत्पन्न शोर, रेलगाड़ियों की आवजें आदि नगरों में ध्वनि प्रदूषण की जनक होती हैं। नगरा में होनेवाले ध्वनि प्रदूषण से बहरेपन, सिर दर्द, मानसिक असंतुलन, उच्च रक्त चाप, घबराहट आदि विविध प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

(xi) अन्य समस्याएँ : नगरों में उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त कई अन्य समस्याएँ भी पायी जाती हैं जिनमें प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक अपराध आदि की समस्याएँ प्रमुख हैं:-

(अ) प्रशासनिक समस्या:- अधिक क्षेत्रीय विस्तार तथा अत्याधिक जनसंख्या के संकेन्द्रण के कारण वृहत नगरों में प्रशासन व्यवस्था का संचालन कठिन हो जाता है। यद्यपि नगरीय प्रशासन नगर पालिका या नगर निगम के हाथ में होता है, किन्तु इसके लिए जनपदीय, प्रांतीय और यहाँ तक कि राष्ट्रीय सरकारों का भी हस्तक्षेप पाया जाता है। अधिकांश नगर पालिकाओं के आर्थिक स्त्रोत सीमित होते हैं और नगरीय आवश्यकताओं की पूर्ति तथा नगर के विकास कार्यो के लिए उन्हें प्रांतीय तथा राष्ट्रीय सरकारों से आर्थिक सहायता लेनी पड़ती हैं। कभी-कभी राजनीतिक मतभेदों के कारण भी नगरीय प्रशासन का संचालन कठिन हो जाता है।

(ब) सामाजिक अपराध :- वर्तमान नगरीय संस्कृति अधिकतर भौतिकवादी है। वहाँ के लोग अधिकाधिक धनोपार्ज करनेवाले और भोग-विलासी होते हैं, जिसके चलते उनके बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा पायी जाती है। जहाँ नगर में अत्याधिक धनी और साधन सम्पन्न लोग रहते हैं, वहीं दूसरी ओर अत्यंत निर्धन लोग संघर्षपूर्ण और कष्टमय जीवन बिताने के लिए विवश होते हैं, जिससे नगरों में चोर बाजारी, जमाखोरी, मिलावट करने,

तस्करी, मादक द्रव्यों के उपयोग, जुआ खेलने, हत्या आदि की प्रवृति अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है। सामाजिक अपराध जिसमें हत्या, अपरहण, डकैती, बलात्कार, मद्यपान आदि शामिल हैं की अधिकता नगरों में पायी जाती है, जिससे नगरीय जीवन दुष्कर और कष्टदायी बन जाता है।

2.6 सारांश (Summing-up)

नगरों का तीव्र गति से बढ़ना तथा नगरों की संख्या में अपार वृद्धि वर्तमान युग का महत्वपूर्ण तथ्य है। सामान्य अर्थ में नगरीकरण (Urbanization) जनसंख्या के नगरीय होने से सम्बन्ध रखता है। वास्तव में नगरीय जनसंख्या व उसके अनुपात में वृद्धि होना 'नगरीकरण (Urbanization) कहलाता है।

नगरीकरण को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है जिसमें ई० ई० बर्गेल, जी० टी० ट्रिवार्थो, ग्रिफिथ टेलर, किंग्सले डेविस, बी० एन० घोष, वी०एल०एस० प्रकाशा राव के नाम शामिल है।

जी० टी० ट्रिवार्था ने नगरीकरण को परिभाषित करते हुए उसकी तीन विशेषताओं के बारे में बताया है जो इस प्रकार है:-

"कुल जनसंख्या में नगरीय स्थानों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात को नगरीकरण का स्तर कहा जाता है।"

'नगरीकरण प्रक्रिया का तात्पर्य कुल जनसंख्या में उस वृद्धि से है, जो कि नगरीश हैं।'

'नगरीकरण की दर से हमारा तात्पर्य होता है कि विभिन्न समयों में कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात में कितनी वृद्धि हुई हैं।

नगरीकरण की निम्नलिखित विशेषताएँ है:-

(i) कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात,

(ii) नगरों की संख्या व उनके आकार में वृद्धि,

(iii) नगरीय जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा अधिक वृद्धि होना।

(iv) ग्रामों का कस्बों व नगरों में परिवर्तित होना,

(v) ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवासित करना,

(vi) किसी स्थान या राष्ट्र का कृषि अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ना।

(vii) प्रशानिक कार्यो में लगी जनसंख्या की तुलना में गैर प्राथमिक कार्यो में लगी जनसंख्या में भारी वृद्धि होना।

नगरों की उत्पति और विकास के लिए अनेक भौगेलिक कारक, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कारक उत्तरदायी होते हैं।

यदि हमलोग विश्व में नगरीकरण के प्रादेशिक प्रतिरूप पर नजर डालते हैं तो नगरीकरण के स्तर में काफी असमानता पायी जाती है। सन् 2000 के आँकड़े के अनुसार विश्व की 47.2 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। विकसित देशों में लगभग 77 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। विकासशील देशों की नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 40 है। सारणी 2.2 से स्पष्ट है कि जहाँ एक ओर सिंगापुर और हांगकांग की सम्पूर्ण जनसंख्या नगरीय है और बेलिजयम की 98 प्रतिशत और कुवैत की 96 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है, वहीं दूसरी ओर रूआण्डा, भूटान और बरूण्डी की क्रमशः 6.2, 7.1 और 9 प्रतिशत जनसंख्या ही नगरीय है।

नगरीय समस्याओं का मूल कारण नगरों में आवश्यकता से अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण तथा नगर के अनियोजित विस्तार देशों में ही नहीं, बल्कि विश्व के विकसित देशों में भी अधिसंख्य नगरों का विकास अनियोजित ढंग से हुआ है। वास्तव में नगर में जनसंख्या का केन्द्रीकरण इतनी शीघ्रता और अनियंत्रित ढंग से होता है कि वहाँ अपेक्षित नागरिक सुविधाओं का विकास नहीं हो पाता है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ जन्म लेती है, जिनमें प्रमुख नगरीय समस्याएँ निम्नलिखित है:- (i) स्थानाभव की समस्या (ii) आवास समस्या (iii) परिवहन की समस्या (iv) जलापूर्ति की समस्या (v) विद्युत आपूर्ति की समस्या (vi) चिकित्सा, शिक्षा आदि सेवाओं की समस्या (vii) नगरीय अपशिष्ट की समस्या (viii) मल-मूत्र विर्सजन और जल निकासी की समस्या (ix) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या (x) अन्य समस्याओं में (अ) प्रशासनिक समस्या (ब) सामाजिक अपराध जैसी समस्याएँ देखने को मिलती है।

2.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. नगरीकरण से आप क्या समझते हैं? नगरीकरण को प्रभावित करनेवाले कारकों का वर्णन करें।
2. नगरीकरण से आप क्या समझते है? विश्व में नगरीकरण के प्रादेशिक प्रतिरूपों का वर्णन करें।
3. विश्व के नगरीयकरण का संक्षिप्त परिचय देते हुए नगरीय समस्याओं का वर्णन करें।

2.8 संदर्भ पुस्तकें (References Books)

Mandal, R.B. : Urban Geography

Rao, B.P. : Nagriya Bhugol

डॉ० सुरेश चन्द्र बंसल : नगरीय भूगोल

डॉ० एस० डी० मौर्य: अधिवास भूगोल

●●●